7. बसंत की सच्चाई

- विष्णु प्रभाकर

छात्र इस एकांकी में चित्रित ईमानदारी से प्रेरित होकर प्रामाणिकता से जीना सीख सकते हैं।

पात्र-परिचय

बसंत : एक गरीब शरणार्थी लड़का

प्रताप : बसंत का छोटा भाई

पंडित राजकिशोर : एक नेता

डॉक्टर तथा दो राह चलते व्यक्ति

पहला दृश्य

(स्टेज पर सुविधानुसार एक बड़े नगर के बाज़ार का प्रतीकात्मक दृश्य। आने-जाने, लेने-देने का शोर, फेरीवालों की पुकार। उन्हींके बीच में एक लड़का, नंगे पैर, फटे कपड़े पहने, हाथ में सामान संभाले भागता हुआ आता है। उसकी आयु लगभग 12 वर्ष की है। उसका नाम बसंत है। वह पुकार रहा है।)

© TBS Not to be republished

बसंत : छलनी ले लो, बटन ले लो, दियासलाई ले लो।

(कोई उसकी बात नहीं सुनता। सब उसे देखते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। इसी समय एक खद्दरधारी व्यक्ति वहाँ से जाते दिखाई देते हैं। हाथ में सामान से भरा थैला है। वे मजदूर नेता पं. राजकिशोर हैं। बसंत उन्हें देखकर उनके पीछे भागता है।)

बसंत : साहब! बटन लीजिए, देसी बटन। साहब, दियासलाई लीजिए।

राजकिशोर : भाई! मुझे कुछ नहीं चाहिए। जाओ, किसी और को दो।

बसंत : साहब छलनी लीजिए। दूध छानिए, चाय छानिए...

राजकिशोर : मुझे नहीं चाहिए।

बसंत : बटन...

राजकिशोर : नहीं।

बसंत : दियासलाई...

राजकिशोर : नहीं, नहीं।

बसंत : (विनम्र स्वर) साहब एक छलनी ले लीजिए। सिर्फ दो आना कीमत है।

राजकिशोर : पर भाई ! मुझे नहीं चाहिए तो कैसे ले लूँ ?

बसंत : अच्छा आप छः पैसे...।

राजकिशोर : ओहो! कह दिया मुझे कुछ नहीं चाहिए।

बसंत : (रुआँ-सा) साहब, सबेरे से अब तक कुछ नहीं बिका। आपसे आशा थी। साहब ! एक तो ले लीजिए।

राजकिशोर : (जेब से दो पैसे निकालते हुए) तुम तो... अच्छा तुम्हें पैसे चाहिए। लो, ये दो पैसे लो और जाओ।

बसंत : (एकदम) नहीं साहब, नहीं। मैं पैसे नहीं लूँगा।

राजकिशोर : नहीं लोगे ?

K T B S Not to be republished

बसंत : जी नहीं, आप छलनी ख़रीद लीजिए।

राजकिशोर : अच्छा, एक छलनी में तुम्हें क्या बचेगा ?

बसंत : दो पैसे।

राजकिशोर : तो बस पैसे ले लो और समझ लो मैंने एक छलनी ख़रीद ली।

बसंत : नहीं साहब, नहीं। यह तो भीख है। मैं भीख नहीं लूँगा। आप छलनी ले लें।

(राजकिशोर पर इस बात का बड़ा असर होता है। वे सहसा उस बच्चे को देखते हैं फिर जेब टटोलते हैं, पर पैसे नहीं मिलते।)

राजकिशोर : भाई, मेरे पास पैसे नहीं हैं। होते तो ले लेता, नोट है।

बसंत : (उदास) नोट है। पैसे तो मेरे पास भी नहीं हैं। कुछ बिका ही नहीं।

राजकिशोर : तभी तो कहता था। अच्छा, कल ले लूँगा या मेरे घर ले आना। किशनगंज में रहता हूँ।

बसंत : (एकदम) नहीं साहब, आज ही ले लीजिए। आप नोट मुझे दीजिए, मैं अभी बाज़ार से भुना लाता हूँ।

राजकिशोर : भाई तुम तो...

बसंत : बस मैं यह आया।

राजकिशोर : अच्छा लो, भुना लाओ, अभी आना।

बसंत : अभी आया, साहब। आप यहीं ठहरें ; अभी पलक मारते ही आया।

(बसंत नोट लेकर बाज़ार की ओर भागता है। राजकिशोर वहीं खड़े रहते हैं। धीरे-धीरे पंद्रह-बीस मिनट बीत जाते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता है, वे उत्सुक होकर बाज़ार की ओर देखते हैं।)

KTBS Not to be republished

राजकिशोर	:	पंद्रह मिनट हो गए, अब तक नहीं आया। कहाँ रह गया? मुझे तो लगता है अब नहीं लौटेगा।

दूसरा दृश्य

(स्टेज पर ज़रा सा परिवर्तन के साथ पहले जैसा दृश्य। एक ओर किशनगंज का बोर्ड लगा हुआ है। हल्का शोर है। संध्या हो गई है। लोग घरों की ओर लौट रहे हैं। उन्हींके बीच में एक दुबला-पतला लड़का जल्दी-जल्दी आता है। वह नंगे पैर है, कपड़े फटे हैं। आयु लगभग दस वर्ष है। उसकी शक्ल बसंत से मिलती है। वह उसका छोटा भाई प्रताप है। वह आते-जाते व्यक्तियों से कुछ पूछ रहा है। उसके मुख पर व्यग्रता है।)

प्रताप	:	क्यों जी, किशनगंज यही है ?
एक व्यक्ति	:	हाँ।
प्रताप	:	पं. राजकिशोर कहाँ रहते हैं ?
एक व्यक्ति	:	कौन राजकिशोर ?
प्रताप	:	जो लैक्चर देते हैं। मजदूरों की बस्ती में जाते हैं।
एक व्यक्ति	:	मैं नहीं जानता, आगे पूछो।
		(प्रताप आगे बढ़ जाता है, और एक दूसरे व्यक्ति से पूछता है।)
प्रताप	:	क्यों जी, पं. राजकिशोर कहाँ रहते हैं ?
दूसरा व्यक्ति	:	कौन पं. राजकिशोर ? वे जो मजदूरों के नेता हैं ?
प्रताप	:	हाँ, हाँ, वे ही।
दूसरा व्यक्ति	:	(इशारा करके) उधर देखो, वह नीला परदा है न!
प्रताप	:	हाँ।
दूसरा व्यक्ति	:	बस वे वहीं रहते हैं।

Not to be republished

(व्यक्ति आगे बढ़ जाता है। प्रताप नीले परदे वाले मकान के सामने जाकर पुकारता है।)

प्रताप : राजकिशोर जी, पं. राजकिशोर जी !

(अंदर से आवाज़ आती है।)

राजकिशोर : कौन ? (खिड़की से झाँककर देखते हैं) क्यों भाई, क्या बात है?

प्रताप : जी, मुझे मेरे भाई ने भेजा है।

राजकिशोर : तुम्हारा भाई ! ठहरो मैं आता हूँ। (बाहर आकर) तेरा भाई कौन है, बच्चे !

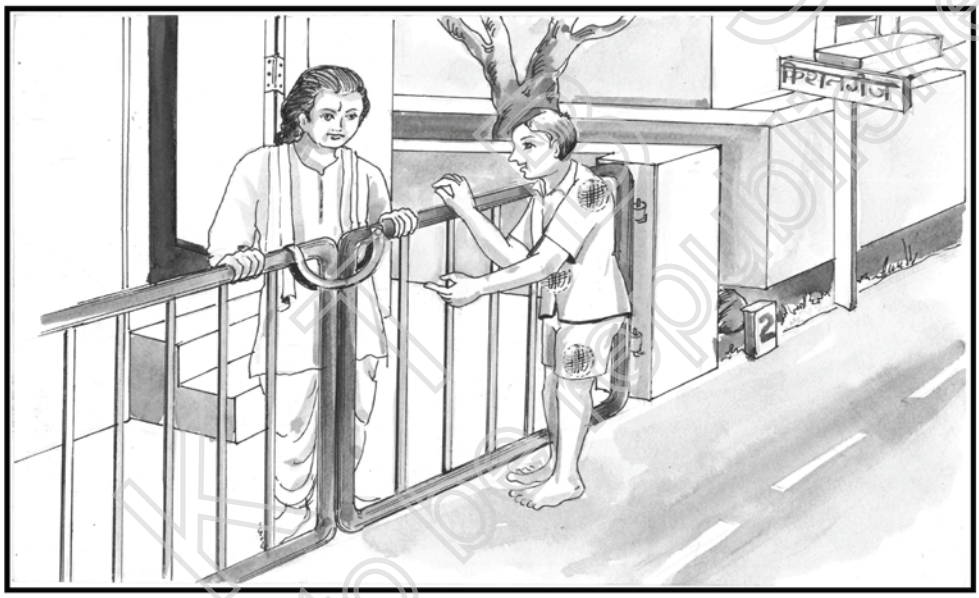

प्रताप : आज दोपहर को उसने आपको एक छलनी बेची थी।

राजकिशोर : हाँ, हाँ, आज मैंने एक लड़के से एक छलनी ली थी। एक रुपए का नोट दिया था।

प्रताप : वह नोट भुनाने गया था, मगर जब भुनाकर लौट रहा था तो मोटर के नीचे आ गया। मोटर उसके ऊपर से निकल गई।

राजकिशोर : (अचरज) क्या ! मोटर उसके ऊपर से निकल गई !

Not to be republished © NCERT

प्रताप : (स्वर गिरता है) उसका सामान, पैसे, सब बिखर गए। उसके दोनों पैर कुचले गए।

राजकिशोर : (भय) पैर कुचले गए...

प्रताप : (रुआँ-सा) जी हाँ। और इसलिए वह आपके पास न आ सका। वह बेहोश हो गया था। बड़ी मुश्किल से उसे घर ले गए। बड़ी देर में जब उसे होश आया तो उसने मुझे आपके पैसे लौटाने को कहा। मैं आपके साढ़े चौदह आने लाया हूँ।

राजकिशोर : (खोया-खोया) मेरे साढ़े चौदह आने लाए हो। उसने भेजे हैं! लेकिन बच्चे ! वह अब कहाँ है ?

प्रताप : घर।

राजकिशोर : घर में कौन है ?

प्रताप : कोई नहीं।

राजकिशोर : कोई नहीं...?

प्रताप : जी हाँ ! मैं और मेरा भाई, हम दोनों भीखू अहीर के घर में रहते हैं।

राजकिशोर : तुम्हारे माँ-बाप क्या...

प्रताप : (रो पड़ता है) वे मारे गए। दंगों के दिनों में उन्हें किसी ने मार डाला...

राजकिशोर : (खोया-खोया) उन्हें किसी ने मार डाला? तुम दोनों भीखू अहीर के घर रहते हो! (एकदम जागकर) बच्चे! रोओ मत। मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ। अभी...

प्रताप : आप मेरे साथ चलेंगे ?

राजकिशोर : हाँ, अभी चलो। (आगे बढ़ते हैं) पर हाँ ! तुम्हारा घर कहाँ है ?

प्रताप : अहीर टीले में।

राजकिशोर : (अंदर की ओर देखकर) अमरसिंह! मैं अहीर टीला जा रहा हूँ। तुम इसी वक्त डॉ. वर्मा को लेकर वहाँ आओ। कहना कि एक लड़के की टाँगें मोटर के नीचे आकर कुचली गई हैं। जल्दी करो! भीखू अहीर का घर पूछ लेना। (मुड़कर) आओ बच्चे, चलें।

(प्रताप चकित-विस्मित उन्हें देखता है। फिर ठगा-सा उनके आगे-आगे जाता है। परदा गिरता है।)

(स्टेज पर एक कच्चे घर के अंदर के ओसारे का दृश्य। ज़मीन पर फूस का ढेर, उस पर बसंत लेटा है। रह-रह कर दर्द से कराह उठता है। प्रताप और राजकिशोर का प्रवेश)

प्रताप : यह रहा, साहब।

राजकिशोर : अरे ! यह तो ज़मीन पर लेटा है।

बसंत : (चकित होकर) आप ! आप आए हैं....

राजकिशोर : कहाँ चोट लगी है, बेटा ? देखूँ....

(राजकिशोर पास आकर टाँग देखते हैं। किसी ने फस्ट ऐड दी है। पट्टी बँधी है। छूते ही चीख़ निकल जाती है। बसंत ओठ भींचकर आह खींचता है।)

बसंत : ओह, ओह ...

(राजकिशोर कुछ देर इसी तरह देखते हैं।)

राजकिशोर : नहीं, नहीं, घबराओ नहीं।

बसंत : (दर्द से कराहते हुए) मैं मोटर से टकरा गया था, इसलिए तब आपके पैसे न लौटा सका।

राजकिशोर : उस बात की चिंता न करो, बेटा! मैंने डॉक्टर को बुलवाया है। तुम ठीक हो जाओगे।

बसंत : डॉक्टर को बुलवाया है...

KTBS Not to be republished

(डॉक्टर का प्रवेश)

डॉक्टर : हैलो पंडित जी ! मैंने इसे बाज़ार में देखा है।

राजकिशोर : जी हाँ ! ज़रा देखिए तो।

(डॉक्टर पैर देखते हैं। बसंत ज़ोर से ओठ भींचता है। प्रताप की आँखों से आँसू झरते हैं। वह कभी भाई को देखता है, कभी डॉक्टर को। राजकिशोर उत्सुकता से पूछते हैं।)

राजकिशोर : क्यों डॉक्टर ! ठीक हो जाएगा न ?

डॉक्टर : (गंभीर) पंडितजी ! ऐसा लगता है कि पैर की हड्ड़ी टूट गई है। स्क्रीन करके देखना होगा। दूसरा पैर ठीक है, पर इसे अभी अस्पताल ले जाना चाहिए।

राजकिशोर : तो क्या हुआ, अभी ले चलो। मैं एम्बुलंस के लिए फोन कर आता हूँ।

डॉक्टर : जी हाँ, कर आइए। मैं तब तक इंजेक्शन लगाता हूँ।

बसंत : (आँखें खोलकर)आप ! आप क्या कर रहे हैं ? मैं गरीब हूँ...

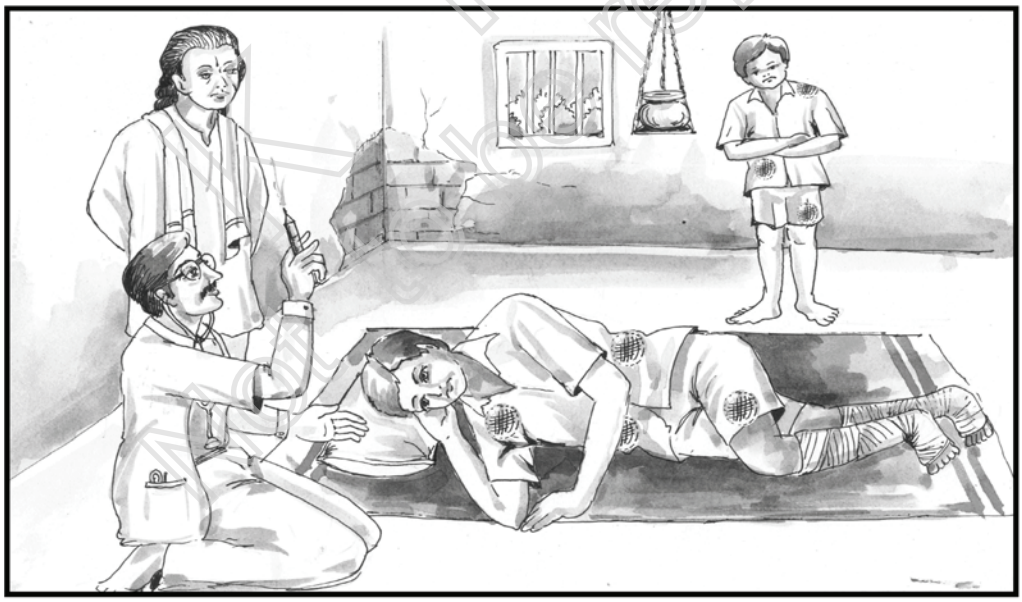

© KTBS Not to be republished

राजकिशोर : (हँसकर) तुम चिंता मत करो। बस चुपचाप लेटे रहो बेटा ! डॉक्टर साहब ! जब तक मैं नहीं आता आप यहीं रहें, इसे बचाना ही होगा। यह गरीब है पर इसमें एक दुर्लभ गुण है, यह ईमानदार है।

डॉक्टर प्रताप की सहायता से इंजेक्शन तैयार करते हैं। बसंत आँखें बंद कर लेता है। क्षण भर के लिए उसके मुख पर शांति और कृतज्ञता उभर आती है। डॉक्टर इंजेक्शन लगाते हैं, बसंत ओठ भींचता है। प्रताप भाई का सिर थामता है, और परदा गिरता जाता है।

******

पाठ का आशय :

विष्णु प्रभाकर मानव-मन के पारखी लेखक हैं। इस एकांकी में उन्होंने स्वाभिमान, परदु:खकातरता जैसी मानवीय भावनाओं का सुंदर चित्रण किया है। गरीब होकर भी स्वाभिमानी और परिश्रम की कमाई से जीनेवाले बसंत और प्रताप एक ओर हैं तो दूसरी ओर कंगालों के प्रति हमदर्दी दिखाते हुए आदर के साथ व्यवहार करनेवाले राजकिशोर जैसे पात्र अनुसरणीय हैं।

लेखक का परिचय : विष्णु प्रभाकर (1912-2009)

मानव-जीवन का यथार्थ चित्रण करनेवाले लेखकों में विष्णु प्रभाकर जी का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के मुज़फ्फरनगर के मीरपुर में सन् 1912 ई. में हुआ। पंजाब में शिक्षा पाकर वहीं 15 वर्ष तक उन्होंने सरकारी नौकरी की। सन् 1955 में आकाशवाणी के दिल्ली केंद्र में नाटक निर्देशक बने। डेढ़ वर्ष बाद वहाँ से त्यागपत्र दिया और तब से स्वतंत्र साहित्यिक के रूप में जीवन यापन कर रहे थे । पहले कहानी लिखते थे, फिर उपन्यास, नाटक, संस्मरण और रेखाचित्र भी लिखने लगे। आपकी कला

KSEEB Not to be republished

में निखार है। आपकी कृतियों में आदर्शवाद और यथार्थवाद का समन्वय है। मानव-मनोविज्ञान के विश्लेषण में आपको आशातीत सफलता मिली है।

विष्णु प्रभाकर जी गांधीवादी लेखक माने जाते हैं। आपके एकांकी मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत हैं। मानवीय संबंधों का मनोवैज्ञानिक धरातल पर भावात्मक चित्रण उनके एकांकियों की विशेषता है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - आवारा मसीहा, तट के बंधन, निशिकांत, दर्पण का व्यक्ति, धरती अब भी घूम रही है, युगे-युगे क्रांति, गृहस्थी आदि।

शब्दार्थ :

राह- रास्ता, मार्ग ; दियासलाई - ಬೆಂಕಿಕಡ್ಡಿ, Matchstick; छलनी - जालीदार छोटा उपकरण, एक आना- छः पैसे, रुआँ-सा - रोने जैसे, अहीर - ग्वाला, फूस - सूखी घास, ओठ-भींचना - दर्द सहन करना, फेरीवाले - घूम-फिरकर सामान बेचनेवाले व्यापारी, भुना लाना - बड़े सिक्के को चिल्लर/छुट्टे के रूप में बदलना, ओसारा - बरामदा, घर का आगे का भाग; शक्ल - स्वरूप, आकृति; व्यग्रता - व्याकुल, उद्विग्न, बेचैन ।

अभ्यास

I मौखिक प्रश्न :

1. बसंत क्या-क्या बेचता था?
2. बसंत के भाई का नाम क्या था ?
3. पंडित राजकिशोर क्या काम करते थे ?
4. छलनी का दाम क्या था ?
5. बसंत और प्रताप कहाँ रहते थे ?

II. लिखित प्रश्न :

अ. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. बसंत की सच्चाई एकांकी में कितने दृश्य हैं?
2. एकांकी का प्रथम दृश्य कहाँ घटता है?

K-TBS Not to be republished

3. बसंत के घर पर डॉक्टर को कौन ले आता है?
4. पं.राजकिशोर के अनुसार बसंत में निहित दुर्लभ गुण क्या है?
5. पं.राजकिशोर कहाँ रहते थे?

आ. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. छलनी से क्या-क्या कर सकते हैं ?
2. बसंत राजकिशोर से क्या विनती करता है?
3. बसंत राजकिशोर से दो पैसे लेने से क्यों इनकार करता है?
4. बसंत राजकिशोर के पास क्यों नहीं लौटा ?
5. प्रताप राजकिशोर के घर क्यों आया?
6. बसंत ने राजकिशोर को छलनी खरीदने के लिए किस तरह प्रेरित किया?
7. बसंत के पैर देखकर डॉक्टर ने क्या कहा ?

इ. चार-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. बसंत ईमानदार लड़का है । कैसे?
2. बसंत और प्रताप अहीर के घर में क्यों रहते हैं?
3. राजकिशोर के मानवीय व्यवहार का परिचय दीजिए ।

ई. किसने कहा? किससे कहा?

1. ''नहीं साहब, नहीं । मैं पैसे नहीं लूँगा।''
2. ''आप क्या कर रहे हैं? मैं गरीब हूँ।''
3. ''आज दोपहर को उसने आपको एक छलनी बेची थी।''

उ. रिक्त स्थान भरिए :

1. मैं अभी बाज़ार से ..... लाता हूँ ।
2. मैं आपके ..... आने लाया हूँ ।

K.T.B.S. Not to be republished

3. हम दोनों ..... के घर में रहते हैं ।

4. मैं ..... के लिए फोन कर आता हूँ ।

5. इसमें एक दुर्लभ गुण है, यह ..... है ।

ऊ. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार लिखिए :

1. एक छलनी में तुम्हें क्या बचेगा ? (वर्तमानकाल में)

2. मैं अभी बाज़ार से भुना लाता हूँ । (भूतकाल में)

3. एक दूसरे व्यक्ति से पूछता है । (भविष्यत्काल में)

ऋ. विलोमार्थक शब्द लिखिए :

1. पीछे × .....

2. खरीदना × .....

3. लेना × .....

4. आना × .....

5. शांति × .....

6. गरीब × .....

III. परियोजना :

- विष्णु प्रभाकर के अन्य एकांकियों की सूची बनाइए और किसी एक एकांकी का सार संक्षेप में लिखिए ।

पाठ से आगे -

- 'बसंत की सच्चाई' एकांकी का मंचन अपनी कक्षा में कीजिए ।
- प्रेमचंद की 'पंचपरमेश्वर' कहानी पढ़िए और कक्षा में सुनाइए ।

******

K T B S Not to be republished